कृषि अवस्थिति के सिद्धान्त

किसी क्षेत्र में कृषि का प्रतिरूप वहाँ अनेक भौतिक तथा सामाजिक - आर्थिक कारकों का प्रतिफल होता है। इन कारकों द्वारा कृषि दृश्यभूमि विकसित होती है।

वॉन थ्यूनेन का सिद्धान्त

जर्मन विद्वान वॉन थ्यूनेन (1783-1850) ने कृषि अवस्थिति का सर्वप्रथम सिद्धान्त 1826 में प्रस्तुत किया। उनका सिद्धान्त अंशतः एडम स्मिथ तथा एल्बर्ट थेयर जैसे अर्थशास्त्रियों के अध्ययन पर तथा अंशतः उनके निजी अनुभवों पर आधारित था। वे मैक्लेनबर्ग में फार्म मैनेजर के पद पर दीर्घकाल तक कार्यरत रहे थे। उनका कृषि अवस्थिति का सिद्धान्त तुलनात्मक लाभ के सिद्धान्त पर आधारित है। कुछ अपने जागीर (मेकलेन वर्ग में रास्टाक के निकट टैलो नाम के स्थान) में उपलब्ध कार्यानुभव पर आधारित था। यह नियतिवादी सिद्धान्त है।

वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त के आधार :-

वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त को दो प्रारूपों द्वारा समझ सकते हैं।

प्रारूप 1 - बढ़ती दूरी के साथ - साथ भूमि उपयोग में परिवर्तन। यदि दो क्षेत्रों में दो फसलों का चयन करना हो तो किसी क्षेत्र में कौन-सी फसल लगाई जाए यह उस फसल लगाई जाए यह उस फसल की कीमत, उत्पादन लागत परिवहन लागत, प्रति एकड़ उपज, इत्यादि बातों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में किसी एक फसल का उत्पादन दूसरी फसल की

अपेक्षा अधिक हो सकता है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक क्षेत्र को उस फसल के उत्पादन में विशेषीकरण करना चाहिए, जिसका उत्पादन होता है।

प्रारूप 2 - बाजार से बढ़ती दूरी के साथ-साथ भूमि उपयोग की गहनता में कमी। बाजार के निकट उगाई गई फसलों का आर्थिक लगान बाजार से दूर उगाई गई फसलों से अधिक होगा। मुख्य रूप से इसका कारण परिवहन लागत है। थ्यूनेन के अनुसार बाजार के निकट अथवा दूर, दोनों स्थानों में प्रति इकाई उपज एक समान होगी परन्तु बाजार से दूर स्थित भूमि खण्डों के अत्यधिक उत्पादन को बाजार तक लाने के लिए अधिक परिवहन व्यय का भार उठाना पड़ेगा। अतः बाजार से दूर स्थित भूमि खण्डों में व्यापक कृषि ही अधिक लाभदायक होगी जबकि बाजार के निकट गहन कृषि अधिक लाभदायक होगी।

वॉन थ्यूनेन की मान्यताएँ :- वॉन थ्यूनेन की मान्यताएँ निम्नलिखित है -

(1) एक ऐसे विलग प्रदेश की कल्पना की गई, जिसमें केन्द्र में एक नगर है जिसके चारों ओर विस्तृत कृषि क्षेत्र है।

(2) यही नगर इस विलग प्रदेश के कृषि उत्पादन के खपत का एकमात्र बाजार है, जो न तो अन्यत्र से आयात करता है और न ही कृषि आधिक्य को किसी अन्य बाजार में बेचता है।

(3) इस विलग प्रदेश में सर्वत्र एक-सा प्राकृतिक वातावरण है अर्थात् सर्वत्र एक समान धरातल, जलवायु और मिट्टी विद्यमान है।

(4) इस प्रदेश में केन्द्रीय नगर के अतिरिक्त सभी ग्रामीण जनसंख्या है। इसमें बसने वाले कृषक अधिकतम लाभ प्राप्त करने के इच्छुक हैं तथा नगर में मांग के अनुसार फसलों की किस्मों में फेर-बदल करने में सक्षम हैं।
(5) सम्पूर्ण तिलग प्रदेश में एक ही प्रकार के परिवहन साधन घोड़ा गाड़ी उपलब्ध हैं।
(6) परिवहन व्यय दूरी तथा भार के अनुपात में बढ़ता है।

वॉन थ्यूनेन के मौलिक सिद्धान्त :-
थ्यूनेन का सिद्धान्त मुख्य रूप से आर्थिक लगान पर आधारित था, जिसे बाद के भूगोलवेत्ताओं ने स्थानीयकरण लगान का नाम दिया। आर्थिक लगान वस्तुतः वह लाभ है जो विभिन्न प्रकार की उत्पादित वस्तुओं के अर्जित दाम से उत्पादन लागत को घटाकर प्राप्त होता है। थ्यूनेन ने आर्थिक लगान को परिकलन निम्नलिखित सूत्र के रूप में किया है

$LR = Y(m-c) - Ytd.$

जिसमें, LR = स्थानीयकरण लगान Y = प्रति इकाई उपज,
m = उत्पादन के बाजार मूल्य;
c = उत्पादन लागत;
t = परिवहन मूल्य;
d = बाजार से भूमि खण्ड की दूरी

वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त की मेखलाएँ :- वॉन थ्यूनेन के अनुसार, केन्द्र से दूर क्रमशः छः निम्नलिखित भूमि उपयोग मेखलाएँ पाई जाती हैं:
(1) पहला वृत्त खण्ड में दुग्ध, फल एवं शाक-सब्जी की गहन कृषि।

② दूसरे वृत्त खण्ड में लकड़ी का उत्पादन।
③ तीसरे वृत्त खण्ड में, वाहन-कृषि पद्धति द्वारा अन्न का उत्पादन।
④ चौथे एवं पाँचवें वृत्त खण्डों में अपेक्षाकृत विस्तृत खेती द्वारा अन्न की खेती होगी जिसमें कुछ परती जमीन भी छोड़ी जाएगी।
⑤ छठें वृत्त खण्ड में पशुओं के चरागाह का उत्पादन होता है।

बाद में वॉन थ्यूनेन ने दो और कारकों को अपने सिद्धान्त में आत्मसात् किया।

① परिवहन के साधन के रूप में एक नदी जिसमें परिवहन गति अधिक तीव्र एवं परिवहन व्यय 1/10 के बराबर होगा। इसमें संकेन्द्रीय वृत्तखण्डों का स्वरूप बदलकर नदी के दोनों ओर समानान्तर खण्डों में होगा।
② उस विलग प्रदेश में कोई दूसरा उपनगर होता उसकी अपनी स्वतन्त्र पृष्ठभूमि में स्वतन्त्र संकेन्द्रीय वृत्त खण्डों में विभिन्न फसलों के उत्पादन की कल्पना थ्यूनेन ने की।

वॉन थ्यूनेन के सिद्धान्त की आलोचना :-

वॉन थ्यूनेन द्वारा कल्पित विलग प्रदेश की तरह कोई भी क्षेत्र वास्तविक जगत में मिलना कठिन है। आधुनिक समय में परिवहन व्यय केवल गाड़ा तथा दूरी के अनुपात में ही नहीं बढ़ता, बल्कि अन्य कारक भी कार्यरत होते हैं। किसी भी क्षेत्र में उत्पादित वस्तु के लिए अनेक बाजार उपलब्ध हैं।

कृषि के लिए जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण कारक है वह है मिट्टी का उपजाऊपन। इसे थ्यूनेन ने अपने सिद्धान्त में कहीं भी प्रमुखता नहीं दी है।

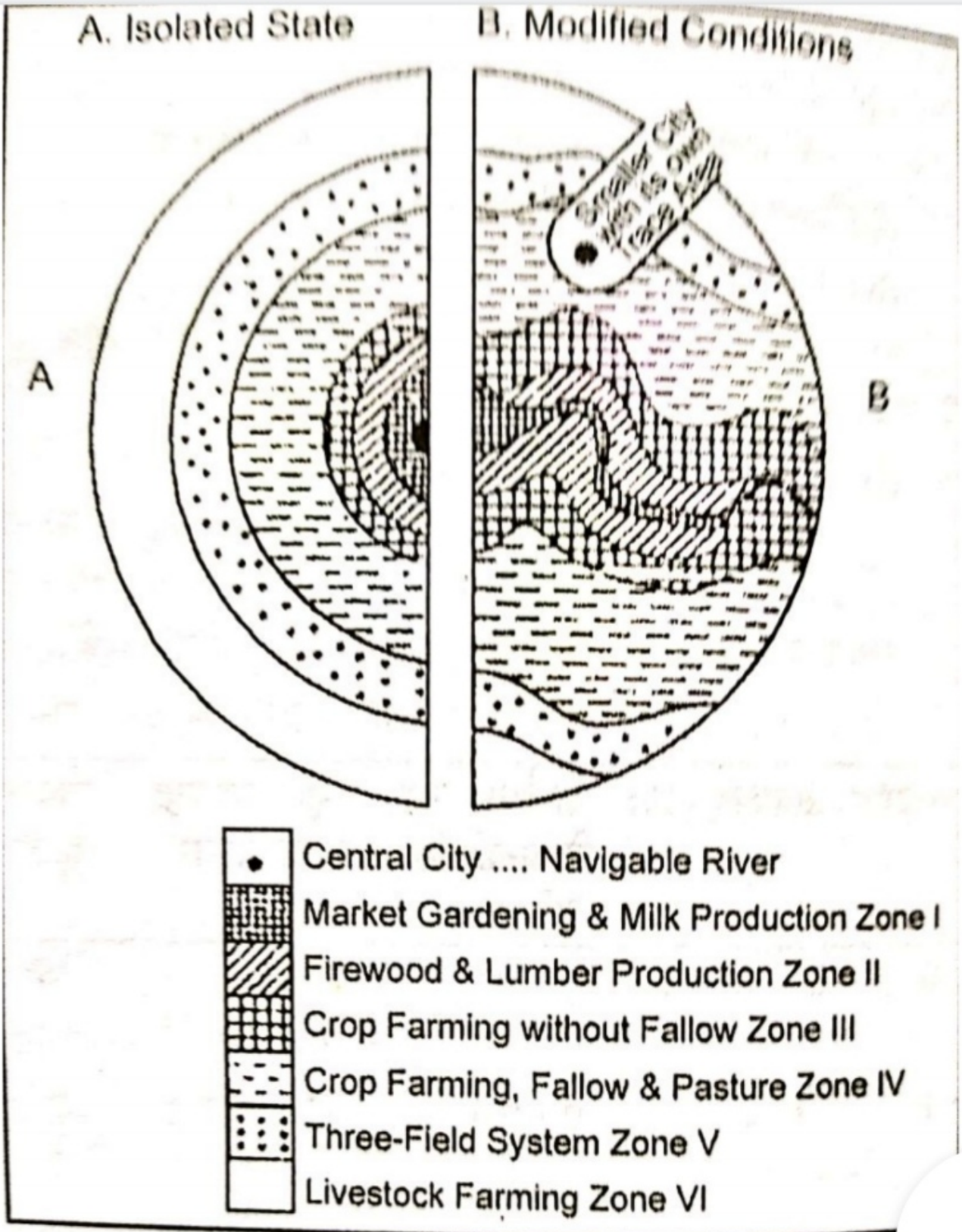

चित्र 13.3 : एकाकी राज्य के चारों ओर कृषि की संकेन्द्रीय पेटियाँ (वॉन थ्यूनेन के अनुसार)

Scanned with CamScanner